<u>एपिसोड - 26</u>

सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों का पर्यावरण पर प्रभाव

मुख्य शोध एवं आलेख - श्री. एस. पी. धारने
हिंदी अनुवाद - श्रीमती सविता यादव

भाग लेने वाले कलाकार:-

1. **मुक्ता - विद्यार्थी (स्कूल)**
2. **विश्वास - कॉलेज का छात्र**
3. **मनोहर - किसान (मुक्ता एवं विश्वास का पिता)**
4. **मानसी - (मुक्ता / विश्वास की माता)**
5. **प्रोफेसर अशफाक -उल-हक - पर्यावरणविद्ध**
6. **प्रमोदनी - भारत मौसम विज्ञान विभाग मे वैज्ञानिक**

प्रारंभिक संगीत

दृश्य - मनोहर का घर .... सांयकाल का समय - बच्चे घर पर खेल रहे है .... रसोई घर ..

संगीत

विश्वास - अपनी पुस्तक से ज़ोर-ज़ोर से पढ़ रहा है | कार्बन- डाई- ऑक्साइड, मीथेन, क्लोरोफ्लोराकर्बन, हाईड्रो- फ्लोरो- कार्बन, नाईट्रस -ऑक्साइड, और यह तक की जल-कण, ग्रीन- हाउस गैसों के प्रभाव का कारक है |

वाह ! इतनी बार इसे दौहराया है, पर याद ही नहीं हो पता है | (कुछ उदास सा)

मुक्ता - ये शोर बंद करो

कुछ पल सभी शांत

विश्वास - (तेज आवाज में) - STOP this stupid noise.

मानसी - विश्वास तुम्हे ये क्या हुआ ! Why are you shouting?

विश्वास - मम्मी ! मुक्ता मुझे पढ़ने नहीं दे रही है | ये देखो क्या खेल रही है ?

मुक्ता - मम्मी ! मैं कुछ नहीं कर रही हूँ | मै तो अकेले ही खेल रही हूँ | चिल्लाना तो भईया की आदत है |

विश्वास - झूठी कहीं की ... रुको..... मै तुम्हे बताता हूँ |

(मुक्ता के पीछे दौड़ता है ... शोर)

मानसी - मुक्ता तुम मेरे पास रसोई में आकर कुछ मदद करो | मैं तुम्हारे लिए गुलाब-जामुन बना रही हूँ |

ध्वनि प्रभाव

विश्वास - कार्बन- डाई-ऑक्साइड, मीथेन, क्लोरो-फ्लोरो - कर्बन, हाईड्रो- फ्लोरो- कार्बन, नाईट्रस -ऑक्साइड..... (repeatedly)

ध्वनि प्रभाव - Doorbell

विश्वास - वोह ! मेरी पढ़ाई का क्या होगा ? अब कौन आ गया है ?

मानसी - मुक्ता देखना कौन है ?

दरवाज़ा / चिटकनी का ध्वनि प्रभाव

विश्वास - हल्लो पापा ! कहाँ रहे आज सारा दिन |

मनोहर - बेटे, आज हम एक फार्म - भ्रमण पर गये थे | तुम लोगों ने आज क्या किया ?

विश्वास - पापा ! मै तो अपना पाठ याद कर रहा था | अगले सप्ताह मेरी परिक्षायें हैं |

मनोहर - बहुत अच्छा मेरे बच्चों | पढ़ाई जीवन में काम आती है | मानसी - मै आ गया हूँ | लगता है कही रसोई में लगी हुई होगी |

मानसी - O.K. welcome. खाना भी तैयार है |

(ध्वनि प्रभाव - टेलीफ़ोन की घंटी)

मनोहर - मुक्ता - देखना किस का फ़ोन है ?

(मुक्ता फ़ोन उठाती है और बात करती है)

मुक्ता : हेलो- मैं प्रमोदनी बोल रही हूँ | तुम कैसी हो ?

(ON TELEPHONE)

मुक्ता- (हँसते हुए) हेलो आंटी ! How are you? लम्बे समय से आपसे मुलाकात नहीं हुई है |

प्रमोदनी- आप सही कह रही है | लम्बे समय से आना ही नहीं हुआ | अच्छा चलो, आज मैं आ ही जाती हूँ, मिलने के लिए (हँसते हुए) मैं दस मिनट में पहुँचने वाली हूँ | मम्मी और पापा को बता देना |

मुक्ता - (टेलीफ़ोन पर) ओके आंटी ! हम सभी डिनर पर आपका इन्तजार करेंगे |

टेलीफ़ोन रखती हुए

मम्मी- पापा ! प्रमोदनी बुआ, आज घर पर आ रही हैं |

मनोहर एवं मानसी - क्या, प्रमोदनी, आ रही है |

मानसी - क्या बात है ? आज ही मेने गुलाब-जामुन बनाये है |

विश्वास - बहुत सुंदर! प्रमोदनी एक बहुत बड़ी मौसम- वैज्ञानिक है | पर्यावरण और मौसम पर क्या जबरदस्त पकड़ है उनकी | मै उनसे कई प्रश्नों के उत्तर पूछना चाहुंगा |

मानसी - Ok ! उनके घर पहुँचने पर एक साथ बैठकर हम डिनर करेंगे |

ध्वनि प्रभाव - दरवाजे पर कॉल -बेल

मुक्ता - अच्छा - मै दरवाजा खोलती हूँ | नमस्ते आंटी ! How are you ?

प्रमोदनी- हेलो मुक्ता ! हेलो मनोहर भईया ! आप सभी ठीक हैं ?

मनोहर - हम बिलकुल ठीक हैं | तुमने तो बहुत surprise दिया | दिल्ली में अचानक कैसे आना हुआ ? कोई सुचना भी नहीं थी |

प्रमोदनी - मैं- आप सभी को surprise देने वाली थी | मैं यहाँ पर एक कॉन्फ्रेंस में आई हूँ और उसमें मेरा एक लेक्चर भी |

मानसी - कौन सी कॉन्फ्रेंस की बात कर रही है ?

प्रमोदनी- यह संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय मौसम परिवर्तन कॉन्फ्रेंस है | तीन दिन की यह कॉन्फ्रेंस कल से विज्ञान भवन में आयोजित हो रही है |

विश्वास - इसमें किस तरह के मुद्दों पर चर्चा होगी ?

प्रमोदनी- पर्यावरण में बदलाव, ग्लोबल वार्मिंग, आदि विषयों पर गहनता से चर्च की जायेगी | हमारे ग्रह और जैव-विविधता पर पड़ रहे प्रभावों को आपस में बांटा जायेगा |

विश्वास - क्या मैं भी इसमें भाग ले सकता हूँ |

मुक्ता- हाँ - हाँ - क्यों नहीं | बड़े- बड़े विश्व भर के वैज्ञानिक इसमें पहुँच रहे हैं |

प्रमोदनी- मुक्ता, ऐसा नहीं है | अच्छा होगा, खुले अधिवेशन में आप सभी पहुंचे | मनोहर भईया को कृषि से सम्बन्धित अनेको नई जानकारियां मिलेंगी | विश्वास और तुम्हे, पर्यावरण के बारे में बहुच कुछ जानने को मिलेगा | ये तुम्हारी पढाई के विषय भी हैं |

मानसी - हाँ - आप सभी को जाना चाहिये | ये काम आने वाली चीजे हैं |

प्रमोदनी - वाह मानसी ! तुम्हारे हाथ का तो जवाब नहीं | तुम्हारे गुलाब- जामुन को देखकर तो मुह भर आया |

ध्वनि प्रभाव - कप - प्लेट - चमच्च
खाना खाने के समय आपसी चर्चा

दृश्य - रात्रि भोजन के बाद का घर का दृश्य

विश्वास- आंटी - मुझे आशा है आप सोने के लिए अभी नहीं जाएँगी | मेरे कुछ सवाल हैं | क्या मैं पूछ सकता हूँ ?

मुक्ता- नहीं ! भुवा तो अभी मेरे साथ खेलेंगी |

प्रमोदनी - बिलकुल ! हम सब मिलकर खेलेंगे | पहले विश्वास के प्रश्नों का उत्तर | विश्वास क्या है, तुम्हारे प्रश्न ?

विश्वास - भुवाजी ! मेरी किताब में बताया गया है कि कार्बन- डाई- ऑक्साइड, मीथेन, क्लोरोफ्लोरो कार्बन, हाईड्रो फ्लोरो कार्बन, नाईट्रस -ऑक्साइड और जल वाष्प को ग्रीन - हाउस गैसों की श्रेणी में डाला गया है | क्या ये सभी गैसें - पर्यावरण की दुश्मन हैं और उसे खराब करती हैं ?

प्रमोदनी- हाँ ! ये सही है | ग्रीन- हाउस गैसे, ग्लोबल वार्मिंग के सबसे बड़े कारक हैं |

विश्वास - परन्तु जब मैं वनस्पती विज्ञान पढ़ती हूँ तो बताया जाता है, कि कार्बन -डाई- ऑक्साइड गैस से ही, सूर्य की रौशनी में, हरे पेड़ -पौधे अपना भोजन बनाते हैं, जो सभी जीव- जन्तुओं के भोजन और खाने के काम आता है | तब यह गैस कैसे खतरनाक हो सकती है ? इसके बिना तो हम भूखे मर जायेंगे |

प्रमोदनी- बहुत अच्छा मेरे बच्चे | Intelligent प्रश्न | तुम्हारा इशारा सही है | परन्तु संतुलन का होना भी उतना ही जरुरी है | कार्बन - डाई- ऑक्साइड का उत्सर्जन और इसमें खपत में समानता का होना जरुरी है | इस अवस्था में यह आवश्यक तापमान को बनाये रख सकता है, और पौधों को भोजन बनाने में सुविधा रहती है | यानि प्रकृति का संतुलित चक्र चलता रहता है |

विश्वास - फिर असंतुलन क्यों है ?

प्रमोदनी- हमारी विभिन्न गतिविधियाँ जैसे उद्योग, उर्जा उत्पादन और वाहनों ने यह संतुलन बिगाड़ दिया है | हम अत्यधिक ग्रीन हाउस- गैसों का उत्सर्जन कर रहे है | यह उष्मा का अवशोषन करती है और धरती का तापमान बढ़ने से ग्लोबल वार्मिंग की स्थिति बनती है |

विश्वास - तापमान बढ़ता है ! यह कैसे ? हमारी धरती तो एक विशाल ग्रह है |

प्रमोदनी- हाँ- ऐसा हो रहा है | मैं कुछ आँकड़े प्रस्तुत करती हूँ IPCC यानि Intergovernmental Panel for climate change का मानना है कि इस सदी के अंत तक हमारी पृथ्वी का औसतन तापमान 1.5° C तक बढ़ जायेगा | इसके गंभीर परिणाम होंगे |

मुक्त - बुआ, प्लीज चलिये ना | अब मेरे साथ खेलिये | मैं कितनी देर से इन्तजार कर रही हूँ |

प्रमोदनी- अच्छा भई अच्छा | चलते हैं | विश्वास, इस विषय पर कल और चर्चा करेंगे |

विश्वास - O.K. बुआ ! शुभ रात्रि | मैं अब सोने के लिए जा रहा हूँ |

#(मुक्ता और प्रमोदनी के चलने का ध्वनि प्रभाव)

दृश्य परिवर्तन

मनोहर - शीघ्र करो | हमें विज्ञान भवन 10.30 बजे तक पहुँचना है | सुबह के समय ट्राफिक भी बहुत होती है | एक घंटा लग जायगा | तुम सभी तैयार होकर आओ | मैं कार बहार निकाल रहा हूँ |

[कार के चलने की आवाज़ | दरवाजे के बंद होने का प्रभाव | सड़क पर कारों के चलने का ध्वनि प्रभाव]

प्रमोदनी- मनोहर भईया - धन्यवाद | हम समय पर पहुँच गये हैं | अभी कॉन्फ्रेंस के शुरू होने में समय है | क्यों ना एक चकर लगा लें |

(वे सभी चल रहें हैं | संगीत ध्वनि)

(पीछे से) - श्रीमान मनोहर .... हेलो मिस्टर मनोहर |

मनोहर - क्या चमत्कार है | विश्वास ही नही होता है | प्रोफेसर अशफाक उल - हक , आपसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई |

प्रो. अशफाक - मनोहर क्या surprise है | कैसे हैं आप ?

मनोहर - मैं ठीक हूँ | मैं आपका परिचय करवाता हूँ | ये मेरी धर्मपत्नी मानसी है | मेरे परिवार की सर्वे - सर्वा और सामाजिक कार्यो में लगी है |

प्रो. अशफाक - नमस्ते मैडम |

मानसी - नमस्ते ! प्रो. असफाक की हिंदी पर अच्छी पकड़ लगती है |

प्रो. अशफाक - मुझे भारत से प्यार है और मैं यहाँ आता रहता हूँ |

मनोहर - वह मेरी बहन डॉ. प्रमोदनी है | एक वरिष्ठ मौसम वैज्ञानिक और उपनिदेशक है भारत मौसम विज्ञान विभाग में |

प्रो. अशफाक- नमस्ते डॉ. प्रमोदनी | मुझे तुम्हारे लेक्चर का इन्तजार रहेगा |

प्रमोदनी - नमस्ते | आपका स्वागत है |

मनोहर- यह मेरा बेटा विश्वास है | कॉलेज में पर्यावरण विज्ञान का छात्र है | और ये मेरी बेटी मुक्ता है | कक्षा 10 की छात्रा ...

प्रो. अशफाक- हेलो बच्चों ! तुम से मिलकर बड़ा अच्छा लगा |

विश्वास और मुक्ता - नमस्ते अंकल !

मनोहर - अच्छा सुनो ! ये हैं प्रोफ़ेसर अशफाक | ये कनाडा में टोरंटो विश्व- विद्यालय में प्रोफ़ेसर हैं |

विश्वास - परन्तु पापा आप इन्हें कहाँ मिले और कैसे जानते हो ?

प्रो. अशफाक- (हँसते हुए) मैं बताता हूँ | पिछले वर्ष, मैं दिल्ली में एक कॉन्फ्रेंस के लिए आया हुआ था | उसका विषय था, "नवोन्मेश और टिकाऊ कृषि" तुम्हारे पापा भी उसमे आये थे और हमारी बहुत से विषयों पर चर्चा हुई थी | बहुत ही प्रगतिशील किसान हैं |

प्रमोदनी - अभी समय है | क्यों नहीं प्रो. अशफाक एक काफी हो जाये ?

प्रो. अशफाक- मैं भी यही सोच रहा था | आइये चाहती हैं |

ध्वनि प्रभाव - काफी शॉप

विश्वास - प्रमोदनी बुआ ! आप मुझे ग्लोबल वार्मिंग पर बताने वाली थी |

प्रो. अशफाक- ग्लोबल वार्मिंग | पर तुम क्यों जानना चाहते हो ?

प्रमोदनी- कल मैं इन्हें, ग्रीन हाउस गैसें और ग्लोबल वार्मिंग पर जानकारियां दे रही थी | विश्वास तुम्हे पता है, प्रो. अशफाक इस विषय में ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक हैं | ग्लोबल वार्मिंग इनका विषय है |

विश्वास - अंकल ! बुआ बता रही थी कि इस सदी के अंत तक हमरी पृथ्वी का तापमान 1.5°C तक बढ़ जायेगा |

प्रो. अशफाक- बिलकुल सही कहा है उन्होंने | यह गंभीर विषय है |

मनोहर - गंभीर ! प्रो. क्या तुम इस पर और अधिक रोशनी डालोगे |

प्रो. अशफाक- हाँ क्यों नही | पहले हम कृषि की ही बात करते है | Ok

मनोहर - हाँ प्रोफ़ेसर ! ये ठीक रहेगा |

प्रो. अशफाक- हमारे देश की आर्थिक व्यवस्था, बहुत कुछ कृषि पर निर्भर है | जैसे - जैसे ग्लोबल वार्मिंग की समस्या बढ़ेगी, वैसे-वैसे कृषि उत्पादन घटता जायेगा | ऐसा कई कारणों से होगा | प्रति एकड़ उपज में कमी आयेगी |

मनोहर - किसानों का जीवन तो और कष्टमयी हो जायेगा |

प्रो. अशफाक- ये यही नहीं रुकेगा| इससे मानसून का चक्र बुरी तरह प्रभावित होगा | इससे सूखे और बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न होने का डर है | इससे किसानों के साथ -साथ राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था भी प्रभावित होगी | सूखे से कृषि के साथ- साथ, पशुपालन भी प्रभावित होगा | मानसून और वर्षा पर निर्भर देश बुरी तरह प्रभावित होंगे |

मानसी - 2018 में केरल में आई बाढ़ इसी का नतिजा है | इससे करोड़ो रूपये की हानि हुई थी | जन धन के साथ-साथ फसलों का, पशुधन का, सम्पदा का नुकशान हुआ और लाखों लोगों के रोजगार छिन' गये | बाढ़ से हुई तबाही के बाद, सामान्य स्थिति होने में कई वर्ष लग जायेंगे | लोगों को पुनर्वास और पुन : स्थापित करना एक बड़ी चुनोती है |

प्रमोदनी- आप सही कह रहे हैं सर ! इस प्रकार की स्थितियां आगे आती रहेंगी |

मानसी - वो कैसे ?

प्रमोदनी- बीमारियाँ फैलेंगी | इसके दो मुख्य कारण हैं | एक है बाढ़ का आना और पानी का ठहराव | जब बाढ़ का पानी उतर जाता है तो चूहों का, मच्छरों का और दूसरे इस प्रकार के कारकों का प्रकोप बढ़ जाता है | मलेरिया, दस्त, हेजा जैसी बीमारियाँ बड़ी तेजी से केरल में फैली थी |

मुक्ता - Oh ! यही कारण है कि बाढ़ के बाद, ये सभी बीमारियाँ बड़ी तेजी से केरल में फैली थी|

प्रो. अशफाक- मुक्ता आपने सही कहा है |

मानसी - यह तो एक कारण हुआ | दूसरा क्या है प्रो. अशफाक ?

प्रो. अशफाक- मच्छर जैसे कीट, पहले ठन्डे क्षेत्रों में नहीं होते थे | परन्तु गर्म होने के कारण, अब इनका प्रकोप वहा भी बढ़ा है | अब इन क्षेत्रों में रहने वाले लोग, मलेरिया, डेंगू, यलो- फिवर जैसे रोगों की चपेट में आ रहे हैं | नई रिपोर्ट के अनुसार कनाडा में भी मच्छरों से फैलने वाले वायरस पाये गये हैं |

विश्वास - Oh my God ! गोबल वार्मिंग के इतने सारे प्रकोप |

प्रो. अशफाक- ये तो शुरुआत है | आगे - आगे देखिये, होता है क्या ? मैं तुम्हे उन्ही के बारे में बताऊंगा जो हमारे देश यानि भारत को प्रभावित करेंगे |

मुक्ता - हाँ अंकल, कृपया बताइये ना |

प्रो. अशफाक- एक है गर्म लू और गर्म हवाओं का चलना | तापमान बढ़ रहा है और ट्रोपीकल क्षेत्रों में पड़ने वाले देशों में, जैसा की भारत - वहाँ पर गर्म हवाओं का प्रकोप बढ़ जायेगा |

प्रमोदनी - हाँ सर ! पिछले तीन सालों में तो तापमान बढ़ोतरी के मामले में रिकॉर्ड तोड़ दिया | राजस्थान के फलोदी शहर में तो 51°C तक तापमान रिकॉर्ड किया गया |

प्रो. अशफाक- ठीक कहा | MIT यानि मैशाच्युट इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के कंप्यूटर आधारित एक अध्ययन में पाया गया है कि सन 2100 तक भारत पाकिस्तान और बंगलादेश मानव के रहने लायक देश नहीं रहेंगे |

विश्वास - हे भगवान क्या होगा | इसके लिए तो कुछ करना होगा |

प्रो. अशफाक- बिल्कुल ठीक मेरे दोस्त | समुंद्र के जलस्तर का भी डर है, जो धीरे-धीरे बढ़ रहा है | जैसे- जैसे तापमान बढ़ेगा, ध्रूवों पर जमी बर्फ पिघलेगी | ग्लेशियर पिघलेंगे | इससे पिघली हुई बर्फ का पानी, नदियों से महासागरों में जायेगा | अधिक पानी आने के कारण, नदियों में बाढ़ आने का खतरा बढ़ जायेगा, जिससे फसलों के अतिरिक्त, जन- धन को हानी होगी | लोगों के विस्थापित होने और उनके पुनर्स्थापित करने की समस्यायें आयेगी |

प्रमोदनी- हाँ प्रोफ़ेसर ! अमेरिका की कॉलोराडो नदी में तो, पानी की आवक छ: गुणा बढ़ गई थी | ये सब हुआ बर्फ के पिघलने से |

प्रो. अशफाक- समुंद्र का जल स्तर बढ़ने से कई छोटे द्वीप, समुंद्र के पानी में समा जायेंगे | समुंद्र तट पर बसे कई शहरों का जल- मगन होने का खतरा है | एक अध्ययन के अनुसार सन 2100 तक महासागरों का पानी 15 से 20 फुट तक चढ़ जायेगा |

प्रमोदनी- इसका विपरित असर भी देखनो को मिलेगा | बढ़ते तापमान के कारण गंगा नदी का ग्लेशियर- गंगोत्री सिकुड़ता जा रहा है | कुछ ग्लेशियर तो 120 फुट तक एक साल में सिकुड़ रहे हैं | इसका मतलब हुआ, भविष्य में कम बर्फ का पिघलना, जिससे नदियों में पानी की आवक कम हो जायेगी | परिणाम- पिने और कृषि सिंचाई के लिए पानी की उपलब्धता का कम होना | नदियों के किनारे बसी आबादी के लिए यह बहुत बड़ा खतरा है |

प्रो. अशफाक- कारण वही एक, परन्तु परिणाम भिन्न- भिन्न | इसके अलावा और भी कई बड़े खतरे हैं | जैव- विविधता धीरे- धीरे कम होने लगेगी | क्योंकि जीव - जन्तु और पेड - पौधे, बढ़ते तापमान को सहन नहीं कर सकेंगे | प्रभावित क्षेत्रों और देशों को आर्थिक तौर पर बहुत बड़ा सामना करना पड़ेगा | वहाँ के रहने वालों को भी कई समस्याओं से सामना करना पड़ेगा |

मानसी - प्रोफ़ेसर | क्या स्थिती हमारे हाथ से निकल चुकी है ?

प्रो. अशफाक- ऐसा ही है | हमें कुछ तो करना ही होगा | हमारी आने वाली पीड़ियों के प्रति कुछ जिम्मेदारियाँ बनती है | सबसे पहले, लोगो को शिक्षित करना पड़ेगा | उन्हें बताना होगा की हमारी गतिविधियों से क्या कुछ हो रहा है और आने वाले समय में क्या हो सकता है, यदि हम संभले नहीं तो |

मानसी - उनको जागरूक करने से साथ- साथ बताना होगा की उन सभी गतिविधियों पर हमें रोक लगानी होगी, जिससे हमारा पर्यावरण बिगड़ रहा है | हमें सही दिशा में बढ़ना होगा और सकारात्मक कदम उठाने होंगे |

विश्वास- मम्मी | आप अपनी स्वयं सेवी संस्थाओं के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों तक ये जानकारियाँ पहुँच सकती हैं | क्यों नहीं इस दिशा में काम शुरु किया जाये |

प्रमोदनी- सरकार ने भी इस तरफ कई कदम उठाये हैं | जीवाष्म ईंधन की खपत को कम किया जा रहा है और गैर - पारम्परिक उर्जा पर ध्यान दिया जा रहा है | जैसे की सौर उर्जा, पवन उर्जा आदि पर सन 2030 तक 40% विद्युत उर्जा का उत्पादन, इसी प्रकार के संसाधनों से करने का लक्ष्य रखा गया है |

मानसी - अपनी संस्थाओं के नेटवर्क के माध्यम से, मैं निश्चित ही अपने सदस्यों को समझाने का पूरा पर्यास करूंगी, जिससे उर्जा खपत में कमी आये और ग्रीन-हाउस गैसों का उत्सर्जन कम हो |

प्रो. अशफाक- हम सब को आगे आना होगा | शीघ्र और तेज गति से काम करने की आवश्यकता है | यह इसलिए भी जरुरी है कि बदलाव बहुत तेज गति से हो रहे हैं | यदि आज और अभी ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन बंद भी कर दिया जाये तो सकरात्मक प्रभाव दिखने में 100 साल लग जायेंगे | इसलिए जितने भी प्रयत्न हो सके करने चाहिय और अभी से कदम उठाने होंगे |

विश्वास - वाह अंकल ! आपने तो बड़ी साधारण भाषा में सब कुछ समझा दिया | Thanks a lot.

प्रो. अशफाक- तुम्हारा स्वागत है, My young friend.

ध्वनि प्रभाव - कॉन्फ्रेंस शुरू होने का Buzzer

प्रमोदनी- हाय ! ये समय है, मेरे लेक्चर का |

अच्छा में चलती हूँ | सांयकाल को फिर मिलते है |

मनोहर - आओ हम सभी भी हाल के अंदर चलते है और देखते हैं, क्या -क्या मुद्दे उठते है |

 # सभी कॉन्फ्रेंस हाल में जाते हुए #
#Closing Part of the Title Music #

****